दिनांक 30.06.2017 को हूल दिवस के अवसर पर दुमका में सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में माननीया राज्यपाल महोदया का सम्बोधन

आज हूल दिवस है। इस अवसर पर मैं संथाल हूल के महानायकों सिदो एवं कान्हु के नाम पर स्थापित सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में भाग लेकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है।

भारतीय इतिहास में स्वाधीनता संग्राम की पहली लड़ाई वैसे तो सन 1857 में मानी जाती है, किन्तु इसके पहले ही वर्तमान झारखंड राज्य के संथाल परगना में ''संथाल हूल'' और ''संथाल विद्रोह'' के द्वारा अंग्रेजों को भारी क्षति उठानी पड़ी थी। सिदो तथा कान्हु, दो भाइयों के नेतृत्व में 30 जून, 1855 ई. को वर्तमान साहेबगंज जिले के भोगनाडीह गांव इस क्रान्ति का आग़ाज हुआ। इस विद्रोह के मौके पर सिद्धू ने घोषणा की थी– करो या मरो, अंग्रेजों हमारी माटी छोड़ो।

इस मौके पर मैं संथाल हूल के महानायकों सिदो, कान्हु, चाँद, भैरव समेत उन सभी अमर शहीदों और उनके हजारों सहयोगियों के प्रति अपनी श्रद्धा–सुमन अर्पित करती हूँ। इस विश्वविद्यालय द्वारा हूल दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन करना सराहनीय है। इससे न केवल लोग, विशेषकर हमारी युवा पीढ़ी स्वतंत्रता संग्राम के ऐसे महानायकों के सन्दर्भ में बेहतर तरीके से अवगत हो सकेंगे, बल्कि प्रेरित भी होंगे। उन्हें तब, यह जानकर और खुशी होती है, जब उन्हें पता चलता है कि ऐसे आजादी के ऐसे महानायक हमारे क्षेत्र के भी थे। खुशी की बात है कि हुल के इन सभी

पहलुओं के विषय पर एक विचारशील ग्रंथ प्रकाशित करने का कार्य किया जा रहा है। आशा है कि यह ग्रंथ उस महत्वपूर्ण घटना को समझने का एक प्रामाणिक एवं पक्का साधन होगा।

सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय का यह दायित्व है कि वे हमारे विद्यार्थियों को निपुण एवं दक्ष बनायें। जहाँ कहीं भी हमारे ये विद्यार्थी रहें, अपने कार्य से सबका नाम रौशन करें। हमारे विद्यार्थियों को एक देशभक्त के रूप में भी जाना जाय, राष्ट्रप्रेम की भावना उनमें प्रबल हो। सिदो कान्हु मूर्मू विश्वविद्यालय शिक्षा एवं अनुशासन के क्षेत्र में एक ऐसी पहचान स्थापित करे कि अन्य राज्यों से भी लोग यहाँ नामांकन के लिए आयें। हमारे शिक्षण संस्थान सिर्फ डिग्री न दें, हमारे युवा और शिक्षक दोनों इस चीज़ को समझें। सिर्फ डिग्री से कुछ नहीं होनेवाला है। आज का युग ज्ञान आधारित है और ज्ञान की कद्र होती है।

उच्च शिक्षा के विकास के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षण संस्थानों में Infrastructure उपलब्ध हों। साथ ही Classes regular हों, Laboratory में आवश्यक उपकरण मौजूद हों, Library विकसित हो। छात्र-छात्राओं को scholarship समय पर सुलभ हो, Hostel की दशा ठीक रहे। कहने का स्पष्ट अभिप्राय है कि सर्वत्र ज्ञान का वातावरण निर्मित हों। हमारे शिक्षक विद्यार्थियों को उसी प्रकार शिक्षा सुलभ कराने हेतु कोशिश करें, जैसा कि वे स्वयं के पुत्र/पुत्री के लिए सोचते हैं एवं गुरू-शिष्य का संबंध अधिक प्रगाढ़ हो, ताकि नैतिक मूल्यों का सर्वोच्च उदाहरण प्रस्तुत किया जा सके। इसके अतिरिक्त Research के क्षेत्र में भी विकास के लिए व्यापक पहल की आवश्यकता है, इस क्षेत्र में Cut और Paste की परिपाटी न रहें, विद्यार्थियों में Innovative ideas विकसित हों, इसके लिए हमारे Academician

Research fellows को encourage करें ताकि शोध में नये–नये आयाम विकसित हों। ये सभी बिन्दु राष्ट्र की प्रगति की दिशा में अपरिहार्य है। साथ ही यह भी कहना चाहूँगी कि Academic Session नियमित हों, कहने का अभिप्राय परीक्षा का ससमय आयोजन, रिजल्ट का समय पर प्रकाशन। हमारे विद्यार्थियों का किसी भी प्रकार का समय बर्बाद न हों।

हमारे विद्यार्थियों को सदैव अनुशासित होकर अपना जीवन व्यतीत करना चाहिये। अनुशासन के बिना सफलता प्राप्ति संभव नहीं है। उन्हें मूल्यों पर जोर देना होगा। उन्हें अपने जीवन में नैतिकता और संस्कार पर सदा बल देना होगा। चारित्रिक बनना होगा। जीवन में यदि कामयाबी हासिल करनी है तो ये सब सबसे जरूरी है कि क्योंकि आपको सबसे पहले एक अच्छा इंसान बनना होगा। और जो अच्छा इंसान बन गया, वह अपनी राह स्वयं चयन कर लेता है। सही मार्ग पर चलकर कामयाबी हासिल कर ही लेता है।

सभी को अपनी कला–संस्कृति के प्रति भी प्रेम रखना चाहिये। खेलकूद भी आवश्यक है। इसके लिए विश्वविद्यालय को निदेश दिया गया है। संभवत: होता भी है। लेकिन सर्वप्रथम पढ़ाई आवश्यक है।

अन्त में यही कहूँगी कि इस विश्वविद्यालय के विकास हेतु सभी पदाधिकारी, शिक्षक एवं कर्मी टीम भावना के तहत कार्य करें। एक बार पुन: हुल क्रान्ति के महानायकों को नमन।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!